AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

पत्रकारिता के विकास में महिला पत्रकारों का योगदान

ORIGINAL ARTICLE

Authors

वंदना अग्रवाल
पी.एच–डी., शोध छात्रा
जनसंचार विभाग
स्पर्श हिमालया विश्वविद्यालय
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

डॉ. सुप्रिया रतूड़ी
शोध निर्देशक एवं अध्यक्ष
जनसंचार विभाग
स्पर्श हिमालया विश्वविद्यालय
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

शोध सार

पत्रकारिता, ऐसा क्षेत्र है, जो बाहर से दिखने में तो आसान लगता है, लेकिन अंदर से उतना ही कठिन है। यह दिखता तो ग्लैमर से भरा है लेकिन यह पूरा सच नहीं है। मेहनत बहुत ज्यादा और पारिश्रमिक अन्य व्यवसायों की तुलना में निश्चित रूप से कम। ड्यूटी की कोई समय सीमा नहीं। कहने को आठ घंटे लेकिन वास्तव में 24 घंटे की ड्यूटी। घर पर रहते हुए भी दिमाग केवल समाचारों में ही व्यस्त रहता है। समय तो है लेकिन खुद के लिए एक दिन भी नहीं। हर वक्त केवल समाचार। एक ऐसा कार्यक्षेत्र जो दूसरे क्षेत्रों से बहुत ज्यादा कठिन और अलग है। आत्मसंतुष्टि तो है, लेकिन डगर आसान नहीं है। जैसे–जैसे पदोन्नति होती है, कठिनाइयां बढ़ती चली जाती हैं यानी पूरा समय आप मीडिया संस्थान के और मीडिया संस्थान आपका, इसके अलावा कुछ नहीं। ऐसे क्षेत्र में जहां पुरुषों का काम करना ही चुनौतीपूर्ण और कठिन है, वहां महिलाओं के लिए अपनी जगह बनाना आसान नहीं है। ऐसे में भी पत्रकारिता में महिलाओं ने न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है, बल्कि अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाकर ऊंचा मुकाम हासिल किया है, पत्रकारिता को नई ऊंचाइयां दी हैं।

मुख्य शब्द

हिंदी पत्रकारिता, महिलाएं, आदर्श, पहचान, महिला पत्रकार.

प्रस्तावना

भारतीय समाज में पुरुषों को महिलाओं की तुलना में श्रेष्ठ माना जाता है। पारिवारिक जिम्मेदारियां हो या बाहरी काम हर जगह उन्हें प्राथमिकता दी जाती है। काम के मामले में महिलाओं को पीछे रखा जाता है खासकर कठिन पेशों में यह अंतर और गहरा हो जाता है। समाज में महिलाओं की स्थिति इतनी सीमित है कि उन्हें पुरुषों जैसे मजबूत स्वर में बोलने की भी आजादी नहीं। उन पर कई तरह की पाबंदियां लगी होती हैं जो उन्हें बांधे रखती हैं। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि ज्यादातर महिलाओं ने खुद को नियमों में बांध भी रखा है। समय के साथ महिलाओं ने हिम्मत की है और आज वह हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। पत्रकारिता भी एक ऐसा ही क्षेत्र है जहां महिलाओं की स्थिति पुरुषों की तुलना में ज्यादा बेहतर नहीं मानी जाती। पत्रकारिता को आज भी महिलाओं के लिए उचित नहीं माना जाता हैं, लेकिन इसके बाद भी बड़ी संख्या में महिला पत्रकार अपना काम कर

रही हैं। पत्रकारिता जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में काम करना और अपना मुकाम बनाना कोई आसान बात नहीं है, लेकिन महिलाओं ने यह कर दिखाया है। कई ऐसी पत्रकार भी हैं जिन्होंने पुरुषों को इस क्षेत्र में पीछे छोड़कर साबित कर दिया है कि वे किसी से कमतर नहीं।

आज बड़ी संख्या में महिलाएं घर से बाहर काम कर रही हैं और अपनी जगह बना रही हैं लेकिन, एक दौर ऐसा थी था जब महिलाओं का पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना तो दूर उनका घर से बाहर निकलना भी आसान नहीं था। तब भी उन्होंने पत्रकारिता जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में कदम रखा और ऐसा काम किया कि आज वर्षों बाद भी उन्हें याद किया जा रहा है। इन महिला पत्रकारों ने यह जता दिया कि महिलाएं किसी से कम नहीं है। खास बात यह है कि उन्होंने पत्रकारिता के एक नहीं, लगभग सभी आयामों में काम किया और इतिहास रच दिया। यही वजह है कि वर्षों बाद भी उनका नाम आदर.सम्मान से लिया जा रहा है। पत्रकारिता में खुद को स्थापित करने वाली पत्रकारों में स्वर्ण कुमारी देवी का नाम सबसे पहले आता है।

देश की पहली महिला संपादक स्वर्ण कुमारी देवी

पत्रकारिता के महत्वपूर्ण संपादक पद पर सबसे पहले पहुंचने वाली महिला पत्रकार हैं स्वर्ण कुमारी देवी। आपने ऐसे समय में पत्रकारिता प्रारंभ की, जब देश दो मोर्चों पर लड़ रहा था, एक था अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति और दूसरा सामाजिक बुराइयों का बंधन तोड़ फेंकना। स्वर्ण कुमारी देवी ने दोनों ही मोर्चों पर लड़ाई लड़ी और कलम को हथियार बनाया। यह वह समय था जब पत्रकारिता एक सशक्त माध्यम था लोगों तक अपनी बात पहुंचाने का, जनमत बनाने का। वे न केवल स्वतंत्रता सेनानी, बल्कि एक अच्छी पत्रकार भी रहीं। अपनी लेखनी के माध्यम से भी उन्हों ने आजादी की लड़ाई लड़ी। स्वर्णकुमारी देवी ने 1877 में बंगाल से निकलने वाली पत्रिका 'भारती' का संपादन किया। पत्रिका का प्रकाशन उनके ही बड़े भाई द्विजेंद्रनाथ टैगोर ने किया था। वे करीब 30 सालों तक ''भारती'' की संपादक रहीं।

स्वर्ण कुमारी देवी का जन्म कोलकाता के जोरासांको में 28 अगस्त 1855 को प्रतिष्ठित टैगोर परिवार में हुआ था। वे कभी स्कूल नहीं गयी, लेकिन पिता ने निजी शिक्षक लगाकर उनकी शिक्षा पूर्ण करवायी थी। खास बात यह थी कि उनकी मां ही लड़कियों की शिक्षा के खिलाफ थीं, लेकिन पिता ने इसके बाद भी लड़कियों को अंग्रेजी और संस्कृत की पढ़ाई करवायी। उनका पहला उपन्यास 1876 में ''दीपनिर्बाण'' आ गया था। बांग्लां में 25 किताबों का लेखन भी उन्होंलने किया। ज्यादा पढ़ी–लिखी नहीं होने के बाद भी लेखन पर उनकी पकड़ देखते बनती थी। अपने लेखन में उन्होंने कई अच्छे प्रयोग किये। वे रविंद्रनाथ टैगोर की बड़ी बहन थीं और भाई के व्यक्तित्व का प्रभाव भी उनकी लेखनी पर पड़ा। आपकी लेखनी का प्रभाव भी रविंद्रनाथ टैगोर पर था और उन्होंने कई जगह इसका जिक्र भी किया है।

स्वर्ण कुमारी के लेखन में गजब की कसावट और तीखे तेवर थे, जिसे पाठकों ने बहुत पसंद किया। पितृसत्तामक विचारधारा का विरोध उनकी लेखनी में स्पष्ट झलकता था। 1927 को कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें जगत तारिणी स्वर्ण पदक से सम्मापनित किया। 1929 में बंग साहित्य सम्मेलन की आपने अध्यक्षता की। साहित्यिक पत्रकारिता में भी उनकी रुचि थी और उन्होंने ''चिन्नमुकुल'' और ''फुलेर माला'' नामक बांग्ला उपन्यास भी लिखे, जिनका बाद में अंग्रेजी और जर्मन भाषा में अनुवाद हुआ। पत्रकारिता में रहते हुए उन्होंाने भाषाई स्तर पर भी काफी काम किया और कई नए शब्दों का सृजन किया। उपच्छया, पर्णिताः, बालाखिल्य, विश्वकाश, त्रिस्तर, सूर्यबिंब जैसे कई शब्द है, जो स्वर्ण कुमारी देवी ने ही गढ़े और बांग्ला भाषा को समृद्ध किया। विज्ञान पर भी उन्होंने जमकर लिखा, जो बाद में एक संग्रह के रूप में भी प्रकाशित किया गया। ''दीपनिर्बाण'' (प्रकाश का बुझना), ''मालती'', ''विद्रोह'', ''बिचित्रा'', ''स्वप्नबानी'', ''मिलनराती'', ''फुलेर माला'' सहित आपके कई उपन्यास प्रसिद्ध है। पत्रकारिता का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र था, जिसमें स्वर्ण कुमारी देवी की पकड़ न हो। उनकी सशक्त लेखनी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उनका एक उपन्यास ''दीपनिर्बाण'' उनके नाम के बिना प्रकाशित होने पर भी बाजार में छा गया था। महिला उत्थान के लिये भी उन्हों ने बहुत काम किये। साल 1932 में 75 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

उन्हें न केवल देश की पहली महिला संपादक का खिताब प्राप्त हैं, बल्कि बंगाल की पहली ऐसी महिला के रूप में भी मान्यता प्राप्त है, जिन्हें एक लेखक के रूप में सफलता मिली।

हिंदी पत्रकारिता की हस्ताक्षर हेमंत कुमारी देवी

हिंदी पत्रकारिता में पुरुष वर्चस्व को चुनौती देकर महिलाओं की राह प्रशस्त करने वाली हेमंत कुमारी देवी पत्रकारिता की सशक्त हस्ताक्षर हैं। वे हिंदी की पहली महिला पत्रकार हैं। हिंदी से उनका विशेष लगाव था और कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन भी उन्होंने किया है।

हेमंत कुमारी का जन्म सितंबर 1868 को लाहौर के एक प्रतिष्ठित बंगाली परिवार में हुआ। पिता नवीनचंद्र राय शिक्षाविद् थे, जिस कारण परिवार में पढ़ाई का माहौल पहले से ही था और इसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर भी पड़ा। पिता स्त्री शिक्षा के समर्थक थे, इसलिए उन्हें पढ़ाई पूरी करने में कोई दिक्कत नहीं आई। लाहौर के क्रिश्चन स्कूल में उन्होंने अंग्रेजी के साथ ही हिंदी, बांग्ला और संस्कृत सीखी। उच्च शिक्षा कोलकाता से हुई। उनका विवाह 1885 को सिलहट के राजचंद्र चौधरी से हुआ और वे पति के साथ शिलॉन्ग चली गईं। यहां आपने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में काम आरंभ किया। 1887 में वे पति के साथ मध्य प्रदेश की रतलाम रियासत आ गईं। यहीं से उनकी पत्रकारिता की यात्रा आरंभ हुई। इस समय उनकी उम्र 20 साल थी। इस दौर में भारती नामक पत्रिका बाजार में थी और हेमंत कुमारी पत्रिका से काफी प्रभावित थी। पिता से सहमति के बाद उन्होंने 1888 में ''सुगृहिणी'' नामक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। इस पत्रिका में कुल बारह पृष्ठ होते थे और पहला व आखिरी पृष्ठ रंगीन होता था। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की यह एक ऐतिहासिक घटना थी। पहली बार किसी महिला पत्रकार ने किसी हिंदी पत्रिका का संपादन किया था। सुगृहिणी की टैगलाइन ही हेमंत कुमारी देवी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के लिये उपयुक्त है। टैगलाइन थी ''विद्या और साध्विता के भूषण से जब नारी अलंकृत होती है, तब मैं उसे अलंकृता समझती हूं। सोने से भूषिता होने से ही अलंकृत नहीं होती।''

यह वह दौर था, जब स्त्री शिक्षा का अभाव था और सामान्यत महिलाएं घर की देहरी से बाहर तक नहीं आ पाती थीं। ऐसे समय में हेमंत कुमारी ने पत्रकारिता को अपनाया और उसे समाज सुधार के लिए हथियार भी बनाया। स्त्री शिक्षा और उनके उत्थान के लिये उन्होने पत्रकारिता का जमकर उपयोग किया। पत्रिका के प्रकाशन के संदर्भ में उन्होंने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहाए ''ओ मेरी प्रिय बहनों, अपने दरवाजे खोलो और देखो कौन तुमसे मिलने आया है। यह आपकी बहन सुगृहिणी है। यह आपके पास इसलिए आई है, क्योंकि आप पर अत्याचार हो रहा है, आप अशिक्षित हो और एक बंधन में बंधी हुई हो। इसका स्वागत करो और इसे आशीर्वाद दो। मां आपकी और सुगृहिणी की सहायता करे।''

स्त्री शिक्षा और जागरूकता के साथ ही उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ पत्रिका को हथियार बनाया और इस प्रयोग में सफल भी हुईं। पत्रिका में महिलाओं से संबंधित मुद्दों के लिये अलग से स्थान तय था, जहां महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य सहित अनेक मुद्दों पर उन्हों ने अपनी कलम चलाई। पत्रिका के मुख्य पेज पर महिलाओं को जागरूक करने वाला एक प्रेरक संदेश प्रकाशित होता था। दो साल बाद वे फिर से शिलॉन्ग लौटीं। 1890 में आर्थिक संकट के कारण पत्रिका बंद हो गयी। 1899 में उन्होंने एक महिला समिति की स्थापना के साथ ही ''अंतःपुर'' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया। यह एक बांग्ला पत्रिका थी। इन पत्रिकाओं के माध्यम से इन्होंने घर के भीतर कैद स्त्री की पीड़ा को बाहर लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

कुछ समय बाद उन्होंने पटियाला पंजाब के एक स्कूल में सुपरिटेंडेंट के रूप में कार्य प्रारंभ किया और थोड़े ही समय में उसकी प्राचार्य बन गयीं। करीब 20 वर्ष तक वे प्राचार्य रहीं। इस दौरान उन्होंने स्त्री शिक्षा को लेकर कई किताबें लिखीं, जिसमें ''आदर्श माता'', ''माता और कन्या'' और ''नारी पुष्पावाली'' प्रमुख है। आदर्श माता के लिये आप पुरस्कृत भी हुईं। खास बात यह है कि मातृभाषा बांग्ला होने के बाद भी उन्होंने हिंदी भाषा की सेवा की और उसे समाजसुधार का माध्यम बनाया। 1953 में उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया।

भीकाजी कामाः विदेशी जमीं पर भारतीय महिला पत्रकार

भारत में रहकर हिंदी पत्रकारिता को बढ़ावा देने वाली महिलाओं का व्यक्तित्व तो गौरवान्वित करता ही है, कई ऐसी महिला पत्रकार भी हैं, जिन्होंने विदेशी जमीं पर हिंदी पत्रकारिता का परचम फहराया। ऐसा ही एक नाम है भीकाजी कामा। करीब 30 वर्ष तक तक उन्हों ने विदेशी धरती पर हिंदी पत्रकारिता की और भारत की आजादी के लिये ईमानदार प्रयास किए। उनके ज्यादातर लेखों में देश की आजादी का स्वर बुलंद होता था।

खास बात यह भी थी कि वे एक पत्रकार होने के साथ आजादी की दीवानी भी थीं। उन्होंने ऐसे उनके कदम उठाएं, जिससे भारत की आजादी का दावा पुख्ता हुआ। 22 अगस्त 1907 को उन्होंने जर्मनी के स्टुटगार्ट में वंदेमातरम लिखा भारत का राष्ट्रध्वज ''इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस'' के कॉन्फ्रेंस में फहराकर अंग्रेजों को सीधे चुनौती दे डाली थी। भीकाजी का जन्म 24 सितंबर 1861 को मुंबई के एक पारसी परिवार में हुआ था। परिवार समृद्ध था, लेकिन कामाजी ने हमेशा ही निर्वासित जीवन बिताया। 1896 में बॉम्बे में भयानक अकाल और प्लेग फैला और कामाजी उसकी चपेट में आ गईं। बीमारी के कारण उनका स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हुआ जिस कारण उन्हें स्वास्थ्य सुधार के लिए लंदन भेज दिया गया। कुछ ही समय में आप यहां दादा भाई नौरोजी के निजी सचिव के रूप में काम करने लगी। इस दौरान भारत की आजादी के लिए कामाजी ने जमकर काम किया। इसी बीच कामाजी ने 1909 में ''वंदेमातरम'' नामक समाचार पत्र निकाला। बर्लिन में शहीद मदन लाल धींगरा की याद में उन्होंने ''मदन तलवार'' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी किया। स्वास्थ्य ज्यादा खराब होने पर वे भारत लौट आयीं और करीब 9 महीने पश्चात 13 अगस्त 1936 को उनकी मृत्यु हो गयी।

होमई व्यारावालाः भारत की पहली महिला फोटो पत्रकार

फोटो पत्रकारिता में भी महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। ऐसे समय में जब कैमरा अपने आप में एक अजूबा था, एक महिला ने इसे अपने हाथ में लिया और फोटो पत्रकारिता का इतिहास रच दिया। होमई व्यारावाला भारत की पहली महिला फोटो पत्रकार थीं, जिन्होने कैमरे से कई ऐसे दुर्लभ फोटो खीचें, जो फोटो पत्रकारिता की पहचान बन गए। होमई का जन्म 9 दिसंबर 1913 को गुजरात के नवसारी में एक पारसी परिवार में हुआ। आपका परिवार मध्यमवर्गीय था और पिता चित्रकार और लेखक थे। पिता के कारण ही होमई एक अच्छी फोटोग्राफर भी बनीं। यह वह समय था, जब फोटोग्राफी पैसे वालों का शौक हुआ करता था साथ ही इस क्षेत्र पर पुरुषों का एकाधिकार था। ऐसे में किसी महिला का प्रवेश करना और सफल होने के साथ ही भारत की पहली महिला फोटोग्राफर बनने का गौरव हासिल करना किसी चमत्कार से कम नहीं था। इस क्षेत्र पर पुरुषों का कितना अधिकार था इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि होमई के फोटो उनके पति के नाम से प्रकाशित होते थे। पत्रकार के रूप में किसी महिला को व्यवस्था स्वीकार ही नहीं करती थी। 1930 में होमई ने मुंबई स्थित ''द इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया'' पत्रिका में काम आरंभ किया और उन्हें जमकर सराहना मिली।

होमाई ने 1942 में दिल्ली में ब्रिटिश सूचना सेवाओं में फोटोग्राफर के रूप में काम आरंभ किया। उनकी तस्वीरें डालडा–13 के नाम से प्रकाशित की जाती थी। होमई ने करीब 32 सालों तक इस क्षेत्र में सफलतापूर्वक काम किया। उनकी खींची कई तस्वीरें आजादी की लड़ाई के ऐतिहासिक क्षणों की गवाह हैं। उनका कहना था कि, लोग रूढ़िवादी थे, वे नहीं चाहते थे कि महिलाएं हर जगह इधर–उधर घूमें और जब उन्होंने मुझे साड़ी में कैमरे के साथ घूमते हुए देखा तो उन्हें लगा कि यह बहुत अजीब दृश्य है। शुरुआत में उन्होंने सोचा कि मैं सिर्फ कैमरे के साथ बेवकूफ बना रही हूं, सिर्फ दिखावा कर रही हूं या कुछ और। उन्होंने मुझे गंभीरता से नहीं लिया लेकिन इससे मुझे फायदा हुआ, क्योंकि अब मैं संवेदनशील इलाकों में जाकर तस्वीरें भी ले सकती थी और कोई भी मुझे नहीं रोकता नहीं था। इसलिए मैं सबसे अच्छी तस्वीरें लेने और उन्हें प्रकाशित करने में सक्षम थी। जब तस्वीरें प्रकाशित हुईं तब लोगों को एहसास हुआ कि मैं उस जगह के लिए कितनी गंभीरता से काम कर रही थी। 1970 में होमाई के पति का निधन हो गया जिसके बाद उन्होंने फोटोग्राफी छोड़ दी। 15 जनवरी 2012 को होमई का निधन हो गया लेकिन उनके द्वारा फोटो पत्रकारिता में किया गया काम आज वर्षों बाद भी गर्व से याद किया जाता है।

निष्कर्ष

हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों के योगदान की यह केवल एक झलक है। ऐसी कई शख्सियत हैं, जिन्होंने हिंदी पत्रकारिता को नई पहचान दी। खास बात यह है कि इन महिला पत्रकारों ने उस दौर में पत्रकारिता को व्यवसाय के रूप में चुना, जब महिलाओं के पास कोई अधिकार नहीं थे और पुरुष पूरी व्यवस्था पर हावी थे। इन महिलाओं ने उस समय पत्रकारिता जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र को अपनाया और एक मुकाम हासिल किया। ये महिलाएं उस समय यदि यह कदम नहीं उठाती, तो आज सैकड़ों महिला पत्रकारों के सामने कोई महिला सफल पत्रकार के रूप में सामने नहीं होती और आज की पीढ़ी बिना आदर्श के किसी मुकाम पर नहीं होती। आज भी महिलाएं पत्रकारिता में सफलतापूर्वक काम कर रही हैं और उनका भविष्य भी उज्ज्वल ही होगा। भविष्य में महिलाएं हिंदी पत्रकारिता में नई ऊंचाइयों को छुएंगी और नए कीर्तिमान स्थापित करेंगी।

भारत में न्यूज चैनलों, अखबारों अथवा पत्रिकाओं को देखें तो आप बहुत सी महिलाओं को एंकर, संपादक और पत्रकार के तौर पर पाएंगे। इसे देखकर आप ऐसी धारणा बना सकते हैं कि भारत में महिलाओं की स्थिति जो भी हो, लेकिन पत्रकारिता में उन्होंने काफी नाम कमाया है पर एक सच यह भी है कि महिलाएं आज भी बदलाव के एक ऐसे सिरे पर हैं जहां उन्हें लंबा सफर तय करना बाकी है। आबादी और पुरुष पत्रकारों के अनुपात मे महिला पत्रकारों की संख्या अभी भी काफी कम है।

संदर्भ सूची

1. अनुजा, एम. (2010) *पत्रकारिता के युग निर्माणः हेमंत कुमारी देवी चौधरी,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. भोला, आर. (2017) *मैडम भीकाजी कामा,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. दास, एस. (1991) *भारतीय साहित्य का इतिहास,* दिल्ली साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
4. मुर्मू, एम. (2015) *स्वर्णकुमारी देबी की साहित्यिक प्रतिरोध,* सेतु प्रकाशन, कोलकाता।
5. शर्मा, एस. (2022) *भारत की पहली महिला फोटो जर्नलिस्ट होमाई व्यारावाला है महिला समानता की मिसाल,* अमर उजाला, नई दिल्ली।
6. थारू, एस.; ललिता, के., (1991) *भारत में महिला लेखन 600 ई.पू. से आरंभिक शताब्दी तक,* खंड–1, ऑक्सफोर्ड यूनि. प्रेस, नई दिल्ली।
7. देवांगन एवं वर्मा (2018) रायपुर के प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पत्रकारों की सूचना आवश्यकता एवं खोज व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन, jru-a.com, Accessed on 05/04/2024.
8. भारत की पहली महिला पत्रकार हेमन्त कुमारी देवी चौधरानी (जुलाई 2022) Prerna Samvad & India's first woman journalist Hemant Kumari Devi Chaudharani, https://prernasamvad.in/story/India's-first-woman-journalist-Hemant-Kumari-Devi-Chaudharani, Accessed on 06/01/2024.
9. हेमंत कुमारी देवीः हिंदी पत्रकारिता की पहली महिला पत्रकार (जून 2022) https://hindi.feminisminindia.com/2022/06/01/hemant-kumari-devi-profile-hindi/, Accessed on 03/07/2024.
10. पिंकसिटी, (2021) पत्रकारिता में महिला पत्रकार, https://pinkcity.com/hi/women-journalists-in-journalism, Accessed on 20/08/2024.
11. शिवानी के. (2024) भारत की पहली महिला पत्रकार हेमन्त कुमारी देवी चौधरानी, https://utisthbharat.com/indias-first-female-journalist-hemant-kumari-devi-choudharani/?utm_source=chatgpt.com, Accessed on 07/11/2024.
12. विदुषी (2023) वो 10 महिला जर्नलिस्ट, जिन्हें भारतीय पत्रकारिता का चेहरा बदलने के लिए जाना जाता है, https://hindi.scoopwhoop.com/women/women-journalists-from-india-who-broke-the-glass-ceiling/?utm_source=chatgpt.com, Accessed on 15/12/2024.

––==00==––